International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 762-763

सूर्योपासना की प्राचीनता

डॉ0 मंजू सिंह
Principal, Jagraut Women College, Kherla Bujurg affiliated to Rajasthan University Jaipur, Rajasthan, India

प्रस्तावना

साम्ब पुराण प्रधान रूप से सूर्य की उपासना से संबंधित उपपुरण है। सूर्योपासना के कारण, पिता के शाप से ग्रसित साम्ब के कुष्ठ रोग से मुक्ति हुई थी। इस कथा को आधार बनाकर ही निस्संदेह साम्ब–पुराण की रचना हुई होगी।

इस पुराण में वर्णित सूर्योपासना न केवल पौराणिक परम्परा में दृष्टिगत होती है, अपितु समस्त ज्ञान राशि के मूलभूत वैदिक वाड्. मय में भी सूर्य से संबंधित अनेक सूक्त उपलब्ध होतें है। इसी कारण सूर्योपासना की प्राचीनता भी अनायास सिद्ध हो जाती है।

ऋगवेद में सूर्य

ऋगवेद के सूक्तों में देवी–देवताओं की स्तुतियॉ है। ऋग्वैदिक देवताओं को तीन भागों में विभाजित किया गया है – 1. द्युस्थानीय देवता यथा सूर्य अश्विनों सविता उषादि 2. अन्तरिक्ष स्थानीय देवता इन्द्र 3. पृथवी स्थानीय देवता अग्नि।

सूर्य द्युस्थानीय देवता है। सौर देवताओं–विवस्वान्, सविता, पूषा, अर्यमा, मित्र आदि मे सूर्य का महत्वपूर्ण स्थान है। ऋगवेद के लगभग चौदह सूक्त सूर्य की स्तुति में रचे गये हैं परन्तु मूल रूप से सूर्य के लिए 10 सूक्त आये है। सूर्य नाम से भौतिक सौर मण्डल का भी बोध होता है। ऋगवेद में अन्य देवताओं की भॉति सूर्य का भी मानवीकरण किया गया है।

सूर्य का शारीरिक वर्णन

सर्वप्रथम ऋग्वेद में सूर्य को आकाश का पुत्र कहा गया है।[1] उनको अदिति का पुत्र या अदितेय भी कहा गया है।[2] इनके पिता द्यौ है।[3] सभी मनुष्य सूर्य के उदय होने के पश्चात् ही सब कुछ देख पाते हैं, इसीलिए सूर्य को समस्त प्राणियों का एकमात्र नेत्र भी कहा गया है।[4] ऋगवेद के प्रसिद्ध पुरूष सूक्त में उल्लेख आता है कि उत्पति विराट पुरूष के नेत्रों से हुई है।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। ऋ0 10.90.13

सूर्य के लिए यह भी कहा गया है कि मृत्यु के पश्चात् मनुष्य के चक्षु सूर्य में मिल जाते है –

सूर्य चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा। ऋ0 10.16.3

सूर्य की किरणें प्रकृति के प्रत्येक कोने–कोने में प्रविष्टि हो जाती है,[5] इसीलिए सूर्य के बहुत दूर तक देखने वाला कहा गया है –

दूरे दृशे देवजाताय केतवे। दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत।।
– ऋ0 10.37.1

सूर्य को विश्व चक्षुषा भी कहा गया है अर्थात् सब कुछ देखने वाला, सूर्य संसार को स्थिर करने वाला और जगत का रक्षक कहा गया है।[6]

सूर्य का रथ

ऋगवेद में सूर्य के रथ का प्रायः उल्लेख हुआ है। एक मन्त्र में यह उल्लेख आता है कि सूर्य के रथ को एक ही घोडा खींचता है। जिसका नाम एतश है।[7] परन्तु अन्य स्थलों पर उल्लेख आता है कि सूर्य के रथ के अश्व खींचते है।[8] इन अश्वों का रंग हरित माना गया है –

सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य शोचिष्केशं विचक्षण।
अयुक्त सप्त शुन्ध्यवः सूरो रथस्य नप्त्यः ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः।।
– ऋ0 1.50.8–9

यही सूर्य के रथ की सर्वाधिक लोकप्रिय धारणा है, जो पौराणिक काल तक अविच्छिन रूप में चली आयी हैं। इसी कारण सूर्य को सप्तति तथा हरितश्व या हरितहय आदि नामों से जाना जाता है। इसके अतिरिक्त ऋगवेद में यह भी कहा गया है कि उनके रथ को असंख्य घोडे खीचतें है।[9] अथवा उनके रथ में घोड़ियाँ है[10] या हरितः नाम की सात घोड़ियाँ[11] अथवा सात तीव्रगामी घोड़ियाँ खींचती है।[12] ऋगवेद के कुछ मन्त्रों में सूर्य का आकाश में उडने वाले पक्षी के रूप में वर्णन हुआ है।[13] एक अन्य स्थल पर उन्हें अरूष सुपर्ण भी कहा गया है।[14] अन्य कुछ स्थलों पर उन्हें श्येन (बाज) भी कहा गया है।[15] एक अन्य मन्त्र में उन्हें चितकबरा बैल भी कहा गया है।[16] सूर्य को आकाश का एक रत्न भी कहा गया है[17] और उनकी तुलना एक चित्रवर्ण के पत्थर से की गयी है जो आकाश के बीच में शोभायमान होता है।[18] सूर्य को एक चक्र भी कहा गया है।[19] सूर्य के रथ का उल्लेख ऋग्वेद के दो मंत्रों में हुआ है।[20] ऋग्वेद में सूर्य के विषय में एकमात्र संक्षिप्त कथा का संकेत मिलता है इस कथा के अनुसार इन्द्र ने सूर्य के रथ को जीतकर उनके (सूर्य) रथ को छीन लिया था –

संवर्ग यन्मधवा सूर्य जयत्। ऋ0 10.43.5

इस प्रकार वैदिक साहित्य में सूर्य का वर्णन एक महत्वपूर्ण देवता के रूप में हुआ हैं वह सौर देवताओं में प्रमुख माने गये है। सूर्य को मनुष्य के कर्म का प्रेरक देवता तथा जड़ एवं चेतन पदार्थ की आत्मा माना गया है।[21]

इस प्रकार ऋगवेद के सूर्य सूक्तों के आधार पर सूर्य का प्राचीनता स्वतः सिद्ध हो जाती है।

संदर्भ

1. ऋ. 10.37.1
   दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत।
2. ऋ. 10.50.13
   उदगादयमोदित्यः।
   ऋ. 1.191.9,
   उदप्तदसौ सूर्यः पुरु विश्वानि जूर्वन्।
   ऋ. 1.191.9,
   आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा।
   ऋ. 8.101.11,
   वण्महॉ असि सूर्य, बळादित्य महॉ असि।
   महस्ते सुतो महिमा पनस्यतेऽद्वा देव महॉ असि।
3. ऋ. 10.37.1
   दिवस्पुत्राय सूर्याय शसंत।
   दूरेदृशे देवजाताय केतवै।।
4. ऋ. 10.158.4
   चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे चक्षुर्विख्यै तनूभ्यः।
5. ऋ. 7.35.8
   शं नः सूर्य उरूचक्षा उदेतु।
6. ऋ. 1.50.2,
   सूराय विश्वचक्षसे।
7. ऋ. 7,6,3,2,
   समानं चक्रं पर्याविवृत्सन।
   यदेतशो वहति धूर्षु युक्तः।।
8. वही 5.45.9,
   आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः।।
9. ऋ., 1.115.3,
   भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य।।
   वही, 10.49.7,
   अहं सूर्यस्य परियाम्याशुभिः प्रैतशेभिर्वहमान् ओजसा।।
10. वही, 5.29.5,
    यत्सूर्यस्य हरितः पतन्तीःपुर सतीरुपरा एतशेकः।।
11. वही, 1.50.8,
    सप्त त्वा हरितो रथ्झे वहन्ति देव सूर्य।।
12. वही, 4.13.3,
    तं सूर्यं हरिः सप्त यह्वीः स्पशं विश्वस्य जगतो वहन्ति।।
    महाकवि कालिदास ने भी सूर्य के रथ का वर्णन किया है अभिज्ञान शाकुन्तलम् में भानुः सकृत्युक्त तुरड़ एवं
13. वही, 10.177.1.0.2,
    पतंगमक्तमसुरस्य मायया।।
    वही, पतड्गो वाचं मनसा विभर्ति।।
14. वही, 5.47.3
    उक्षा समुद्रो अरुषः सुपर्णः।।
15. वही, 7.63.5,
    श्येनो दीयन्नन्वेति पाथः।।
16. वही, 10.189.1 आयं गौः पृश्निरक्रमीत।।
    वही, 5.47.3 उक्षा समुद्रोअरुषः सुपर्णः पूर्वस्य योनि पितुरा विवेश। मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा।
17. ऋ. 7.63.4,
    दिवोरुक्म उरुचक्षा उदेति।
    वहीं, 5.47.3,
    पुश्निरश्मा।
18. वही, 1.175.4,
    मुषाय सूर्ये कवे चक्रमीशान ओजसा।
19. वही, 4.30.4,
    यत्रोत बाधितेभ्यश्चक्रं कुत्साय युध्यते।
    मुषाय इन्द्र सूर्यम्।
20. वही, 4.28.4,
    त्वायुजा नि खिदत्सूर्यस्येन्द्रश्चक्र सहस्सा सद्य इन्द्रो।
    वही, 5.29.10,
    प्रान्यच्चक्रमवृहः सूर्यस्य।
21. वही, 1.115.1,
    सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।
    वही 7.60.2,
    विश्वस्य स्थातुजगतश्च गोपाः।